17 अगस्त 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

पर से एकत्व और ममत्व तोड़ने का एकमात्र उपाय प्रत्येक वस्तु की स्वतंत्र सत्ता का सम्यक् बोध ही है।

– बा. भा. अनुशीलन, पृष्ठ-82

वर्ष : 33, अंक : 10 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अगस्त (द्वितीय), 2010 सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

३३वां आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 1 से 10 अगस्त, 10 तक 33 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का उद्घाटन श्री सुखदयालजी देवड़िया केसली के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री विमलकुमारजी जैन दिल्ली (अध्यक्ष-अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र) ने की।

सभा को संबोधित करते हुये विद्वत् शिरोमणी डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर ने गुरुदेवश्री की महिमा करते हुये श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के प्रारंभ होने की कहानी सुनाई। उन्होंने कहा कि तत्त्वप्रचार पहले की अपेक्षा बहुत बढा है, आज हमें इसके उज्ज्वल पक्ष को देखने की आवश्यकता है। पहले सोनगढ से बहुत कम विद्वान प्रवचनार्थ बाहर जाते थे, परन्तु आज सैकड़ों विद्वान जाते हैं। बात क्वांटिटी की ही नहीं है, आप यदि हमारे विद्यार्थियों को सुनेंगे तो उनमें भी आपको वही क्वालिटी मिलेगी।

हम सभी भगवान महावीर एवं कानजीस्वामी के अनुयायी हैं; अत: आपस में विरोध नहीं करें, मिल-जुलकर तत्त्वप्रचार करें, एक-दूसरे का सहयोग करें।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट का परिचय श्री बसन्तभाई दोशी ने दिया। मंचासीन समस्त अतिथियों का तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री अमृतभाई मेहता एवं श्री सुमनभाई दोशी ने तिलक लगाकर, माल्यार्पण से स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने किया ।

उद्घाटन सभा के पूर्व शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री पी.के.जैन रूड़की ने किया। ध्वजारोहणकर्त्ता श्री डॉ.शरदजी जैन भोपाल थे। इस अवसर पर आचार्य कुन्दकुन्द के चित्र का अनावरण श्री सुभाषचन्दजी नांगलोई दिल्ली की ओर से डॉ. राकेशजी शास्त्री लोनी, पण्डित टोडरमलजी के चित्र का अनावरण श्री राकेशजी जैन खेकड़ा एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के चित्र का अनावरण श्री जीतमलजी जैन परिवार मुम्बई ने किया।

शिविर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के समयसार की गाथा-९२ से ९७ पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी के प्रात: समयसार एवं रात्रि में पुरुषार्थ से मोक्षप्राप्ति पर प्रवचनों के साथ-साथ पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड आदि विद्वानों के प्रवचन हुये।

प्रतिदिन चलनेवाली प्रौढ कक्षाओं में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा षट्कारक, पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री द्वारा छहढाला, ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, पण्डित संजीवजी गोधा द्वारा नयचक्र, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा द्वारा गोम्मटसार की कक्षा ली गई।

दोपहर की सभा में प्रतिदिन बाबू जुगलकिशोरजी युगल के सी.डी. प्रवचन एवं महाविद्यालय के छात्र विद्वान प्रवचन के उपरान्त विशिष्ट व्याख्यानों में पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर के प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रात: ५.३० बजे प्रौढ कक्षा में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित कमलचन्दजी पिडावा, पण्डित सुरेशचन्दजी टीकमगढ, पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, पण्डित रूपचंदजी बण्डा, पण्डित अशोकजी सिरसागंज, पण्डित मधुकरजी जलगांव एवं पण्डित सुनीलजी धवल के प्रवचनों का लाभ मिला।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पूर्व कु.परिणति पाटील ने बाल कक्षा ली।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्री चन्द्रेशभाई वेलजीभाई जयपुर, श्री ज्ञानचंदजी व सुरेशचंदजी कोटा, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं श्री नवीनचंदजी केशवलालजी मेहता मुम्बई थे।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री बाबूलालजी पंचोली थांदला, डॉ. अरविन्दभाई दोशी गोंडल, श्री मांगीलालजी भरतकुमारजी जैन कुम्भराज, श्री अनिलकुमार बाबूलालजी दोशी मुम्बई, श्री महीपालजी ज्ञायक व

(शेष पृष्ठ 7 पर...)

सम्पादकीय – 40

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ६२

विगत गाथा ६१ में ऐसा कहा है कि अपने स्वभाव-विभाव परिणामों को करता हुआ जीव अपने परिणामों का ही कर्त्ता है, पुद्गलमयी द्रव्यकर्मों का कर्त्ता नहीं है।

अब प्रस्तुत ६२वीं गाथा में कहते हैं कि – कर्म अपने स्वभाव से अपने को करते हैं तथा उसीप्रकार जीव भी कर्म स्वभावभाव से अर्थात् औदयिक आदि भावों से बराबर अपने को करता है।

मूल गाथा इसप्रकार है –

कम्मं पि सगं कुव्वदि सेण सहावेण सम्ममप्पाणं।
जीवो वि य तारिसओ कम्मसहावेण भावेण।।६२।।

(हरिगीत)

कार्मण अणु निज कारकों से करम पर्यय परिणमें।
जीव भी निज कारकों से विभाव पर्यय परिणमें।।६२।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव कहते हैं कि – 'कर्म अपने स्वभाव से अपने को करते हैं और वैसा ही जीव भी कर्म स्वभाव भाव से अपने को करता है।

आचार्य श्री अमृतचन्द्र विशेष स्पष्टीकरण करते हुए टीका में कहते हैं कि निश्चयनय से अभिन्नकारक होने से कर्म व जीव स्वयं स्वरूप से अपने-अपने भाव के कर्त्ता हैं। एक दूसरे के कर्त्ता नहीं।

निश्चय से जहाँ कर्म को कर्त्ता कहा वहाँ जीव कर्त्ता नहीं है और जीवरूप कर्त्ता के कर्म कर्त्ता नहीं है। (जहाँ कर्मों के कर्त्तापन है वहाँ जीव कर्त्ता नहीं है और जहाँ जीव कर्त्ता है वहाँ कर्मों को कर्तृत्व नहीं।

भावार्थ यह है कि पुद्गल के परिणमन में पुद्गल ही षट्कारक रूप हैं। (१) पुद्गल स्वतंत्ररूप से द्रव्यकर्म को करनेवाला होने से पुद्गल स्वयं ही कर्त्ता है। (२) पुद्गल स्वयं ही द्रव्यकर्म रूप परिणमित होने की शक्ति वाला होने से वह स्वयं ही करण है। (३) पुद्गल द्रव्य कर्मों को प्राप्त करता होने से वह ही कर्म है। (४) अपने में से पूर्व परिणाम का व्यय करके द्रव्य कर्मरूप परिणाम करता होने तथा पुद्गल द्रव्य ध्रुव रहने से पुद्गल स्वयं ही अपादान है। (५) अपने को द्रव्यकर्म रूप परिणाम देता होने से पुद्गल स्वयं ही सम्प्रदान है। (६) अपने आधार से द्रव्यकर्म कर्त्ता होने से पुद्गल स्वयं ही अधिकरण है।

इसीप्रकार (१) जीव स्वतंत्ररूप से जीवभाव को करता होने से जीव स्वयं ही कर्त्ता है; (२) स्वयं जीवभावरूप से परिणमित होने की शक्तिवाला जीव स्वयं ही करण है; (३) जीवभाव को प्राप्त करता होने से जीवभाव कर्म है; (४) अपने को जीवभाव देता होने से जीव स्वयं ही सम्प्रदान है; (५) अपने में से पूर्व भाव का व्यय करके (नवीन) जीवभाव करता होने से और जीवद्रव्यरूप से ध्रुव रहने से जीव स्वयं ही अपादान है; (६) अपने में अर्थात् अपने आधार से जीवभाव करता होने से जीव स्वयं ही अधिकरण है।

इसप्रकार, पुद्गल की कर्मोदयादिरूप से या कर्मबंधादिरूप से परिणमित होने की क्रिया में वास्तव में पुद्गल ही स्वयमेव छह कारकरूप से वर्तता है इसलिये उसे अन्य कारकों की अपेक्षा नहीं है तथा जीव की औदयिकादि भावरूप से परिणमित होने की क्रिया में वास्तव में जीव स्वयं ही छह कारकरूप से वर्तता है इसलिये उसे अन्य कारकों की अपेक्षा नहीं है। पुद्गल की और जीव की उपर्युक्त क्रियाएँ एक ही काल में वर्तती हैं तथापि पौद्गलिक क्रिया में वर्तते हुए पुद्गल के छह कारक जीवकारकों से बिल्कुल भिन्न और निरपेक्ष हैं। वास्तव में किसी द्रव्य के कारकों को किसी अन्य द्रव्य के कारकों की अपेक्षा नहीं होती।

कवि हीरानन्दजी इसी बात को काव्य की भाषा में कहते हैं –

(दोहा)

करम करै निजभावकौं, निज सुवाभाव करिलीन।
तैसैं जीव सदा लसै, निज सुभाव परवीन ।।३०१।।
निहचै नै कारक छहौं वस्तु अभेद बखान।
जो यहु जानै भेद सब सो नर सम्यक्वान।।३०२।।

(सवैया इकतीसा)

कर्मरूप पुद्गल है सोई करताररूप,
पावने कौ जोगि परिनाम रूप कर्म है।
कर्मरूप पाइवे की सक्तिरूप करन है,
कर्मरूप आश्रय का सम्प्रदान धर्म है।
एकरूप नासभयै आप ध्रौव्य अपादान,
आश्रय मान रूप का आधारत्व पर्भ है।
एई छहों कारक सौं कर्म परिनाम लसै,
निहचै अभेद अंग कर्मरूप सर्भ है।।३०३।।

(दोहा)

करम करमकौं जो करै, अरु अपनैकौं आप।
कैसैं फल आतम लहै, करम देइ फल-ताप ।।३०४।।

उक्त पद्यों में कहा है कि – जिसप्रकार कर्म निजस्वभाव में लीन रहकर निज भाव के ही कर्त्ता हैं, उसीप्रकार जीव भी सदैव अपने स्वभाव में ही सुशोभित होते हैं। जो व्यक्ति इस रहस्य को जानते हैं, वे ही सम्यक्त्व के धारी ज्ञानी हैं।

कवि ने ३०३ सवैया इकतीसा में षट्कारकों का स्वरूप कहा है। अन्तिम दो पंक्तियों में वे कहते हैं कि – इन्ही षट्कारकों से कर्म का परिणमन शोभनीक है, जो कि निश्चय से एक अभेदरूप ही है।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी उक्त भाव को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि कर्मरूप से परिणमित हुए पुद्गल स्कंध निश्चय से अपने स्वभाव से यथार्थ जैसे के तैसे अपने स्वरूप को करते हैं। तथा जीवपदार्थ भी अपने स्वरूप द्वारा आपको आपरूप करता है।

जीव व पुद्‌गलों में जो अपने-अपने कर्त्ता कर्म करण अभेद षट्कारक होते हैं; उनके स्वरूप की सविस्तार चर्चा करते हुए श्रीकानजीस्वामी कहते हैं कि - इसप्रकार पुद्‌गल द्रव्य स्वतंत्र रूप से एकसमय में छह कारक रूप से परिणमन करता है। जीव द्रव्य के कारण नहीं परिणमता। इन्हें अभेद षट्कारण कहा; क्योंकि ये पर में नहीं है। और जीवादि के पर के षट्कारक उसके अपने कारण होते हैं, वे भी पर के कारण नहीं होते।

इसीप्रकार पुण्य-पाप के षट्कारक भी अपने-अपने होते हैं।

इसप्रकार इस गाथा के माध्यम से जीव व पुद्‌गल के स्वतंत्र षट्कारकों की चर्चा की। ●

सलाहकार समिति का अधिवेशन संपन्न

जयपुर (राज.): यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे शिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक ८ अगस्त को श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट सलाहकार समिति का अधिवेशन रखा गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री महेन्द्रकमारजी चौधरी भोपाल एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री रतनलालजी वन्दना प्रकाशन अलवर, श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, श्री गुलाबचंदजी सागर (सुभाष ट्रांसपोर्ट), श्री पदमकुमारजी पहाड़िया इन्दौर, श्री राजूभाई वाडीलाल शाह अहमदाबाद, श्री नरेशजी लुहाड़िया दिल्ली, श्री देवेन्द्रकुमारजी बड़कुल भोपाल, श्री बसन्तभाई इन्जीनियर अहमदाबाद, श्री लाला अभिनन्दनप्रसादजी सहारनपुर, श्री कन्हैयालालजी दलावत उदयपुर, श्री सुभाषचन्दजी नांगलोई, श्री मगनलाल मामा आरोन आदि महानुभाव मंचासीन थे।

अतिथियों का स्वागत श्री सुमनभाई दोशी मुम्बई, श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई, पण्डित अमृतभाई मेहता फतेहपुर, श्री आलोकजी जैन कानपुर एवं श्री अशोकजी जबलपुर ने किया।

इस अवसर पर विद्वानों के अन्तर्गत तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, ब्र.यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित अनिलकुमारजी भिण्ड आदि विद्वान मंचासीन थे।

कार्यक्रम में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अतिरिक्त ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई, श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल, श्री पदमकुमारजी पहाड़िया इन्दौर, डॉ.उत्तमचंदजी सिवनी, श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा आदि महानुभावों ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

अधिवेशन के उद्‌घाटनकर्त्ता श्री अजयकुमारजी लालचंदजी जैन ग्वालियर थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण कु.परिणति पाटील ने एवं संचालन श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने किया।

सिद्धचक्र विधान एवं शिविर संपन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ देवनगर में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर दिनाँक 17 से 26 जुलाई तक श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट एवं अ. भा.जैन युवा फैडरेशन देवनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक युवा शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

दिनाँक 17 जुलाई को श्री इन्द्रसेनजी जैन गढावालों के परिवार द्वारा मंगल कलश की स्थापना की गयी एवं ध्वजारोहण श्री वीरेन्द्रकुमारजी जैन एडवोकेट ने किया।

इस अवसर पर पण्डित प्रकाशचन्दजी छाबड़ा इन्दौर द्वारा दोनों समय आध्यात्मिक कक्षा का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त पण्डित ऋषभकुमारजी घिरोर, पण्डित रविकुमारजी ललितपुर एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री भिण्ड के प्रवचनों एवं कक्षाओं का भी लाभ मिला।

शिविर में लगभग 500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। विधान के अन्त में दिनाँक 26 जुलाई को वीर शासन जयन्ती के अवसर पर जिनेन्द्र भगवान की शोभा यात्रा निकाली गई।

विधि-विधान का संपूर्ण कार्य पण्डित अनिलकुमारजी धवल भोपाल के निर्देशन में संपन्न हुये। **- सुरेशचन्द जैन**

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द सम्पन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ पुरानी मण्डी स्थित श्री दिगम्बर जैन सीमंधर जिनालय में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनाँक 18 से 25 जुलाई तक श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में चौंसठ ऋद्धि विधान एवं नन्दीश्वर विधान महोत्सव अनेक विविधता के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर मौ (भिण्ड) से पधारे पण्डित कमलेशजी जैन द्वारा दोनों समय ग्रन्थाधिराज समयसार एवं तत्त्वार्थसूत्र पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। कार्यक्रम में शताधिक लोगों ने धर्म लाभ लिया। दिनाँक 25 जुलाई को वीरशासन जयन्ती भी धूमधाम से मनाई गयी।

अन्तिम दिन ट्रस्ट से संस्थापक श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया ने सभी विद्वानों का आभार प्रकट किया।

विधि-विधान का सम्पूर्ण कार्य पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री ध्रुवधाम एवं पण्डित अगमजी जैन मंगलायतन के सानिध्य में संपन्न हुये।

- मनोज कासलीवाल

फरमाइश की तीन तरह की हाऊजी

1. जैन धार्मिक हाऊजी (शब्दों पर आधारित ज्ञानवर्धक)
2. संगीतमय जैन धार्मिक हाऊजी (कर्णप्रिय भजनों पर आधारित)
3. मेरा भारत महान हाऊजी (प्रत्येक कौटी पर भारत के बारे में ज्ञानवर्धक जानकारियों के साथ इसी स्वतन्त्रता दिवस पर प्रकाशित)

समग्र समाज के मन्दिरों, किट्टी पार्टी एवं संस्थागत कार्यक्रमों में रोचकता और ज्ञानार्जन के लिये उपयुक्त।

संपर्क : राकेश गोधा, 581, हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर
0141-2575931, 9828560931, 9351546676

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 12 सितम्बर 2010 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 28 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 13 अगस्त 2010 तक हमारे पास 417 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 12 अगस्त 2010 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 250 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है –

विशिष्ट विद्वानों में ह्र 1.कोटा : बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा **2.बड़ौदा :** डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर **3.जयपुर (स्मारक भवन)** पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर **4.वस्त्रापुर–अहमदाबाद :** डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी **5.सिलवानी :** ब्र. यशपालजी जैन जयपुर **6. सोनागिरजी :** पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि **7.आदर्शनगर जयपुर :** ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियाँधाना **8.हिंगोली :** पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन **9.अकोला :** ब्र. अभिनंदनकुमारजी शास्त्री खनियाँधाना **10.दादर मुम्बई :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर **11.भूलेश्वर, मुम्बई :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली **12.सेलू :** पण्डित पूनमचंदजी छाबडा इन्दौर **13.गोरमी :** ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल' **14.कारंजा :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली **15.नवरंगपुरा :** पण्डित कपूरचंदजी 'कौशल' भोपाल **16.विदिशा (किला अन्दर) :** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर **17.भायंदर–मुम्बई :** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा **18.हिम्मतनगर :** पण्डित शैलेशभाई तलोद **19.छिंदवाड़ा :** डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर **20.मुम्बई सीमंधर जिनालय :** पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर **21.दिल्ली विभिन्न स्थानों पर :** पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन **22. 23. ग्वालियर फालके बाजार–सीमंधर जिनालय :** पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई, विदुषी डॉ. उज्ज्वला शहा मुम्बई **24.राजकोट :** पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट **25.बडोदा :** पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर **26.नागपुर :** पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड **27.चैतन्यधाम–अहमदाबाद :** ब्र. कैलाशचन्द्रजी अचल **28.देवलाली :** डॉ. दीपकजी जैन जयपुर **29.कोलकाता :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना।

विदेश में – 1.लंदन : ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली, **2.शिकागो :** पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन।

मध्यप्रदेश प्रान्त

1.अशोकनगर : पण्डित मीठालाल मगनलालजी दोशी हिम्मतनगर **2.अम्बाह :** पण्डित महेशकुमारजी भण्डारी भोपाल **3.भोपाल (कस्तूरबा नगर) :** डॉ. महेशकुमारजी शास्त्री भोपाल **4.भोपाल (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी मुजफ्फरनगर **5.भिण्ड देवनगर :** पण्डित रूपचन्दजी जैन बण्डा **6.बीड :** पण्डित माधवजी शास्त्री शाहगढ़ **7.गुना :** पण्डित निर्मलकुमारजी जैन सागर **8.ग्वालियर (थाटीपुर) :** पण्डित अरुणकुमारजी ठगन टीकमगढ़ **9.गंजबासोदा :** पण्डित धर्मेन्द्रजी जैन अमरवाडा **10.हरदा :** विदुषी कुसुमलता जैन **11.इन्दौर (रामचन्द्रनगर) :** पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर **12.इन्दौर (साधनानगर) :** पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर **13.इन्दौर (पलासिया) :** ब्र. सुनील शास्त्री शिवपुरी **14.इन्दौर (माणकचौक) :** पण्डित सतीशजी कासलीवाल उज्जैन **15.जबलपुर (मुमुक्षु मंडल) :** पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़ **16.करेली :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री अहमदाबाद **17.केसली :** पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना **18.मौ :** पण्डित सुरेशचन्दजी जैन टीकमगढ़ **19.सागर गोरमूर्ति :** पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा **20.शुजालपुर मण्डी :** ब्र. सुधाबेन छिन्दवाड़ा **21.शिवपुरी छतरी रोड़ शान्तिनाथ जिनालय :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी शिवपुरी **22.सिंगोली :** पण्डित राजेश शास्त्री सिंगोली **23.घोड़ा डूँगरी :** पण्डित सुरेश शास्त्री घोडाडूंगरी **24.मन्दसौर (कालाखेत) :** डॉ. नरेन्द्रकुमारजी जैन जयपुर **25.बीना :** पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर **26.बण्डा बेलइ :** पण्डित नन्दकिशोरजी गोयल विदिशा **27.वनखेड़ी :** पण्डित शेषकुमारजी जैन, उभेगाँव **28.बेगमगंज :** पण्डित मथुरालालजी जैन इन्दौर **29.इन्दौर (शक्कर बाजार) :** डॉ. मानमलजी जैन कोटा **30.इन्दौर (गांधीनगर) :** पण्डित आशीषजी शास्त्री भिण्ड **31.जावरा :** ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन **32.जबेरा :** पण्डित निशान्त शास्त्री बारासिवनी **33.खुरई :** पण्डित प्रकाशचन्दजी झांझरी उज्जैन **34.कुचडौद :** पण्डित पद्मचन्दजी गंगवाल इन्दौर **35.टीकमगढ़ :** पण्डित सुबोधचन्दजी सिंघई सिवनी **36. 37. 38.निसईजी :** पण्डित रतनलालजी जैन होशंगाबाद, विदुषी पुष्पा जैन होशंगाबाद, पण्डित गौरव शास्त्री बाँसवाड़ा **39.रतलाम :** पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री बाँसवाड़ा **40.सनावद :** पण्डित आकेशजी जैन छिन्दवाड़ा **41.सूखा निसईजी (दमोह) :** पण्डित कपूरचन्दजी भायजी सागर **42.सागर मकरोनिया :** पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर **43.सोनागिर :** डॉ. मुकेश शास्त्री विदिशा **44.शिवपुरी :** पण्डित संजयकुमारजी सेठी जयपुर **45.खनियाधाना :** पण्डित रमेशचन्दजी बाँझल इन्दौर **46.ग्वालियर (सोडा का कुआ) :** पण्डित रविकुमारजी जैन ललितपुर **47.सोनागिर :** पण्डित लालजी रामजी विदिशा **48.अकाझिरी :** पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी जैन सागर **49.भोपाल (कोहेफिजा) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर **50.आरोन :** पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि **51.पथरिया :** पण्डित सरदारमलजी जैन बेरसिया **52.शाहपुर :** पण्डित मनोकुमारजी शास्त्री अभाना **53.रहली :** पण्डित संतोषकुमारजी वैध खनियाँधाना **54.शहडौल :** पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन **55.सागर तारनतरन :** पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा **56. 57.ग्वालियर मुरार :** पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, खैरागढ़

58.गढ़ाकोटा : पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री साव खनियाँधाना **59. इन्दौर रामाशा मन्दिर :** पण्डित विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा **60.कोलारस :** पण्डित मिश्रीलालजी जैन केकड़ी **61.कोलारस होटल फूलराज :** पण्डित चितरंजनजी छिन्दवाड़ा **62.भिण्ड परमागम मन्दिर :** पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन सिंगोडी **63.बदरवास :** पण्डित बाबूलालजी वैध खुरई **64.गौरझामर :** पण्डित नितुलजी शास्त्री इन्दौर **65.जबलपुर – रांझी :** पण्डित पदमकुमारजी अजमेरा रतलाम **66.खैरागढ़ :** पण्डित पन्नालालजी जैन **67.रतलाम स्टेशन :** पण्डित सुरेशचन्दजी इंजि. भोपाल **68.शाहगढ़ :** पण्डित धनेन्द्रकुमारजी सिंघल ग्वालियर **69.उज्जैन :** ब्र. नन्हे भैय्या सागर **70.ग्वालियर (चेतकपुरी) :** पण्डित विकासजी शास्त्री खनियाँधाना **71.बेरसिया :** पण्डित जीवनजी शास्त्री घुवारा **72. भोपाल (नेहरु नगर) :** पण्डित सतीशचंदजी पिपरई **73.मंदसौर (गोल चौराहा) :** पण्डित प्रमोदकुमारजी मकरोनिया सागर **74.द्रोणगिरि :** पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री मंगल सोनगढ **75.नरवर :** पण्डित अभयकुमारजी बदरवास **76 राधौगढ :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी पिपरई।

महाराष्ट्र प्रान्त

1.जलगाँव : पण्डित शीतलजी पाण्डे, उज्जैन **2.मुम्बई – घाटकोपर :** पण्डित मनोजकुमारजी जबलपुर **3.मुम्बई – मलाड ईस्ट :** पण्डित संजय शास्त्री जेवर **4.मुम्बई – मलाड वेस्ट (एवरशाइन नगर) :** पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन **5.मुम्बई – बोरीवली :** पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री आगरा वाले, मुम्बई **6.मुम्बई – दहिसर :** पण्डित ज्ञायक शास्त्री मुम्बई **7.वाशिम जवाहर कालोनी :** पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर **8.मलकापुर :** ब्र. सत्येन्द्रकुमारजी मौ **9.एलोरा :** पण्डित गुलाबचन्दजी बोरालकर **10.जयसिंगपुर :** पण्डित विजयसेन पाटिल आलते **11.गजपंथा :** पण्डित राजूभाई जैन कानपुर **12.मुम्बई – बसई :** पण्डित सौरभजी शास्त्री शहपुरा **13.नातेपुते :** पण्डित शीतल रायचन्द दोशी **14.सोलापुर (आदिनाथ मन्दिर) :** पण्डित अनिलकुमारजी इंजि. भोपाल **15.शिरडशहापुर :** पण्डित प्रशान्तजी शास्त्री राजुरा **16.पुणे (स्वाध्याय मंडल) :** पण्डित अरहन्तप्रकाश झांझरी उज्जैन **17.औरंगाबाद :** पण्डित अभिषेक जैन छिन्दवाड़ा **18.पुणे (ओन्ध) :** पण्डित विजयकुमारजी राउत रिठद **19.पुणे (जैन बोर्डिंग) :** पण्डित प्रतीक शास्त्री जबलपुर **20.अक्कलकोट :** पण्डित चन्दनमलजी शहा नातेपुते **21.चिखली :** पण्डित जीवराजजी जैन नासिक **22.देवलगाँवराजा :** पण्डित विनोदकुमारजी जैन गुना **23.अकलूज :** पण्डित श्रेयांसकुमारजी जैन जबलपुर **24.मुम्बई भूलेश्वर :** पण्डित निखिल शास्त्री कोतमा **25. वाशिम (सेतवाल मंदिर) :** पण्डित शीतलजी शास्त्री कोल्हापुर **26.कारंजा (वीरवाड़ी) :** पण्डित आलोकजी शास्त्री जालाना।

उत्तरप्रदेश प्रान्त

1.बड़ौत : पण्डित नेमीचन्दजी जैन ग्वालियर **2.खतौली :** पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली **3.भौगाँव :** पण्डित सिद्धार्थ दोशी रतलाम **4.कुरावली :** पण्डित हुकमचन्दजी जैन राघौगढ़ **5.कायमगंज :** पण्डित विमलचन्दजी जैन जलेसर **6.मेरठ (तीरगरान) :** पण्डित कमलकुमारजी जैन पिडावा **7.जेतपुर कलां :** पण्डित गोकुलचन्दजी सरोज ललितपुर **8.मैनपुरी :** पण्डित राजीवकुमारजी शास्त्री थानागाजी **9.रूडकी :** पण्डित लालारामजी साहू अशोकनगर **10.शिकोहाबाद :** पण्डित सौरभजी शास्त्री फिरोजाबाद **11.एत्मादपुर :** पण्डित मुरारीलालजी जैन नरवर **12.अमरोहा :** पण्डित विपिनजी शास्त्री फिरोजाबाद **13.गुरसराय :** पण्डित प्रकाशचन्दजी जैन मैनपुरी **14.कानपुर (किदवई नगर) :** पण्डित निकलेश शास्त्री दलपतपुर **15.भौगाँव :** पण्डित जितेन्द्रजी दोशी मुम्बई **16.बांदा :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री दहेगांव **17 लखनऊ :** पण्डित पंकजजी शास्त्री खड़ैरी।

गुजरात प्रान्त

1.अहमदाबाद – मणिनगर : पण्डित नीलेशभाई जैन मुम्बई **2.अहमदाबाद बहेरामपुरा :** डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल अमलाई **3.अहमदाबाद मेधाणीनगर :** ब्र. ब्रजलालजी जैन टोकर **4.दाहौद :** पुष्पाबेन खण्डवा **5.राजकोट :** पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजोलिया **6.अहमदाबाद आशीषनगर :** पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर **7.तलौद :** पण्डित विनोदकुमारजी जैन जबेरा **8.मौरवी :** पण्डित मधुकरजी जैन जलगाँव **9.अहमदाबाद – पार्श्वनाथ चैत्यालय :** पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री गनोडा (बांसवाड़ा) **10.वापी :** पण्डित अनुरागजी शास्त्री भगवां **11.सूरत :** पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल **12.अहमदाबाद पालडी :** पण्डित विनीतजी शास्त्री आगरा **13.रखियाल :** पण्डित दीपकजी कोटडिया अहमदाबाद **14.अहमदाबाद (चैतन्यधाम) :** पण्डित संदीप शास्त्री शहपुरा।

राजस्थान प्रान्त

1.अजमेर : पण्डित श्रेणिकजी जैन जबलपुर **2.बूँदी (मल्लाशाह मंदिर) :** पण्डित मोहनलालजी राठौर केशवरायपाटन **3.डूंगरपुर (पत्रकार कॉलोनी) :** पण्डित लक्ष्मीचन्दजी जैन डूंगरपुर **4.डूंगरपुर (शिवाजी नगर) :** पण्डित अमितजी शास्त्री बाँसवाड़ा **5.कोटा (रामपुरा) :** पण्डित विक्रान्त शाह सोलापुर **6.कुशलगढ़ :** पण्डित श्रीपालजी कीकावत घाटोल **7.रावतभाटा :** पण्डित संजय शास्त्री हरसौरा **8.उदयपुर (मंडल) :** पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर **9.उदयपुर (से.–3) :** पण्डित अशोककुमारजी सिरसागंज **10.उदयपुर (से. – 11) :** पण्डित कमलेशकुमारजी शास्त्री मौ. **11.उदयपुर – गायरियावास :** पण्डित नागेशजी जैन पिड़ावा **12.जयपुर (रेल्वे स्टेशन) :** डॉ. विमलकुमारजी शास्त्री जयपुर **13.बिजौलिया :** ब्र. पुष्पाबेन झांझरी उज्जैन **14.बिजौलिया :** ब्र. ज्ञानधारा झांझरी उज्जैन **15.उदयपुर – केशवनगर :** पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री गुढाचन्द्रजी **16.बाँसवाड़ा (ध्रुवधाम) :** पण्डित विमोशकुमारजी शास्त्री खडैरी **17.शहाबाद :** पण्डित भगवतीप्रसादजी शास्त्री **18.कोटा (इन्द्रविहार) :** पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद **19.भीलवाड़ा :** पण्डित चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा **20.बीकानेर :** पण्डित

(शेष पृष्ठ 7 पर...)

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

58 पन्द्रहवाँ प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

कल के प्रवचन में निश्चयाभासी द्वारा शास्त्रों के स्वाध्याय करने को निरर्थक बताने के संबंध में विचार किया था। अब उसके आगे यह विचार करते हैं कि वह निश्चयाभासी गुणस्थानादि के विचार को विकल्प में पड़ना कहकर निषेध करता है; वह कहाँ तक सत्य है ?

उक्त संदर्भ में पण्डितजी के विचार इसप्रकार हैं –

''तथा यदि द्रव्यादिक के और गुणस्थानादिक के विचार को विकल्प ठहराता है, सो विकल्प तो हैं; परन्तु निर्विकल्प उपयोग न रहे, तब इन विकल्पों को न करे तो अन्य विकल्प होंगे, वे बहुत रागादि गर्भित होते हैं तथा निर्विकल्पदशा सदा रहती नहीं है; क्योंकि छद्मस्थ का उपयोग एकरूप उत्कृष्ट रहे तो अन्तर्मुहूर्त रहता है।[१]''

यहाँ भी पण्डित टोडरमलजी वही शैली अपनाते हैं। पहले तो **ठहराता** शब्द के माध्यम से प्रश्नचिन्ह खड़ा कर देते हैं। उनके इस ठहराने शब्द से पाठक समझ जाता है कि इसमें भी कुछ न कुछ गड़बड़ है। बाद में कहते हैं कि यह बात तो सत्य ही है कि गुणस्थानादिक के विचार विकल्प हैं।

गुणस्थानादि के विचारों के विकल्प होने में तो कोई मतभेद है ही नहीं; परन्तु मुद्दे की बात तो यह है कि निश्चयाभासी गुणस्थानादिक के विचारों को विकल्प कहकर उनका निषेध करता है। कहता है कि आत्मार्थी गृहस्थों को गुणस्थानादि के संबंध में कुछ सोचना भी नहीं चाहिए।

उक्त संदर्भ में पण्डितजी का कहना यह है कि यद्यपि गुणस्थानादि संबंधी विचार भी विकल्प होने से आत्मानुभवन की अपेक्षा हेय हैं; तथापि स्थिति यह है कि गृहस्थावस्था में निर्विकल्पदशा या तो होती ही नहीं है और **ज्ञानी गृहस्थों के होती भी है तो उसका काल अत्यन्त अल्प होता है। अत: बुरे विकल्पों से बचने के लिए अच्छे विकल्पों का होना अनुपयोगी नहीं।**

यह तो सर्वविदित ही है कि मुनिराजों के भी निर्विकल्पदशा के काल से सविकल्पदशा का काल दुगुना होता है; **ज्ञानी गृहस्थों की निर्विकल्प दशा का काल तो बहुत सीमित है। ऐसी स्थिति में वस्तुव्यवस्था के अध्ययन, मनन, चिन्तन, घोलन में उपयोग नहीं लगायेगा तो फिर विषय-कषाय के विकल्पों में तो बिना प्रयत्न के ही उपयोग लगेगा। इसलिए विषय-कषाय से बचने के लिए द्रव्यादिक एवं गुणस्थानादि के विचार में उपयोग का लगना अच्छा ही है।**

स्वाध्याय में दोगुना लाभ है; क्योंकि ज्ञान की वृद्धि तो होती ही है, विषय-कषाय संबंधी विकल्पतरंगों से भी बचे रहते हैं।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २०१

शिष्य की ओर से स्वयं प्रश्न उपस्थित करते हुए पण्डितजी कहते हैं-

''तथा तू कहेगा कि मैं आत्मस्वरूप का ही चिंतवन अनेक प्रकार किया करूँगा; सो सामान्य चिंतवन में तो अनेक प्रकार बनते नहीं हैं और विशेष करेगा तो द्रव्य-गुण-पर्याय, गुणस्थान, मार्गणा, शुद्ध-अशुद्ध अवस्था इत्यादि विचार होगा।[१]''

इसप्रकार हम देखते हैं कि द्रव्य-गुण-पर्याय, गुणस्थान, मार्गणास्थान आदि का चिन्तन ज्ञानी-अज्ञानी सभी गृहस्थों को अनावश्यक नहीं, उपयोगी ही है।

पण्डितजी की भाषा एकदम जीवन्त भाषा है; उसमें नाटकीय तत्त्व विद्यमान हैं। लिखने में भी वे ऐसी भाषा का प्रयोग करते हैं कि जैसे कोई सामने बैठा हो और किसी बात पर जिद कर रहा हो।

कहीं-कहीं **'तथा तू कहेगा कि'** – ऐसा लिखकर मानो अभी उसने कुछ कहा ही नही है; फिर भी वह भविष्य में ऐसा कह सकता है – इस संभावना के आधार पर वे अपनी बात प्रस्तुत करते हैं।

अन्त में पण्डितजी उसी जीवन्त भाषा में लिखते हैं कि –

''और सुन, केवल आत्मज्ञान से ही मोक्षमार्ग होता नहीं है।

सात तत्त्वों का श्रद्धान-ज्ञान होने पर तथा रागादिक दूर करने पर मोक्षमार्ग होगा। सो सात तत्त्वों के विशेष जानने को जीव-अजीव के विशेष तथा कर्म के आस्रव-बन्धादिक के विशेष अवश्य जानने योग्य हैं, जिनसे सम्यग्दर्शन-ज्ञान की प्राप्ति हो।[२]''

देखो, टोडरमलजी के अलावा और कौन माई का लाल कह सकता है कि **केवल आत्मज्ञान से ही तो मोक्षमार्ग नहीं होता।**

जो लोग अकेले आत्मज्ञान से ही मोक्षमार्ग मानते हैं; उन्हें पण्डित टोडरमलजी के उक्त शब्दों पर ध्यान देना चाहिए।

सात तत्त्वों के ज्ञान-श्रद्धान को आचार्य उमास्वामी सम्यग्दर्शन कहते हैं।[३] अत: सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिए तत्त्वार्थों का जानना, उनके स्वरूप का गंभीर चिंतन-मनन करना अत्यन्त आवश्यक है। फिर भी यह निश्चयाभासी विकल्पोत्पादक कहकर उनकी उपेक्षा करता है।

(क्रमश:)

आध्यात्मिक शिविर संपन्न

सूरत (गुज.) : यहाँ भटार रोड़ स्थित आशीर्वाद पैलेस में दिनाँक 30 जुलाई से 4 अगस्त तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित जयकुमारजी कोटा द्वारा दोनों समय पांच भावों पर तथा पण्डित अनुरागजी शास्त्री इन्दौर द्वारा दोनों समय द्रव्य-गुण-पर्याय एवं पंचलब्धि विषय पर एवं दोपहर में छहढाला पर कक्षा ली गई। **– वीरेश जैन**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २०१ २. वही, पृष्ठ २०२

३. तत्त्वार्थसूत्र अध्याय १, सूत्र २

(पृष्ठ 5 का शेष...)
कैलाशचन्दजी शास्त्री मोमासर **21.उदयपुर (से.5) :** डॉ. महावीरजी जैन टोकर **22.पिड़ावा :** पण्डित भोगीलालजी जैन उदयपुर **23.उदयपुर (मण्डी की नाल) :** पण्डित कान्तिकुमारजी पाटनी इन्दौर **24.चित्तौड़गढ़ :** पण्डित पदमकुमारजी कटारिया केकड़ी **25.जौलाना :** पण्डित विमलकुमारजी जैन लाखेरी **26.बांसवाड़ा :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री द्रोणगिरि **27. भिण्डर :** पण्डित अजितकुमारजी फिरोजाबाद **28.अलवर (चैतन्य एन्क्लेव) :** पण्डित अनिलजी शास्त्री धवल भोपाल **29. अलवर :** डॉ.अरुणजी शास्त्री राजुरा **30.अलवर :** पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री फुटेरा **31.अलवर :** पण्डित प्रेमचंदजी शास्त्री ललितपुर।

दिल्ली

विभिन्न उपनगरों में तत्त्वप्रचारार्थ निश्चित किये गये ४९ विद्वान-

1. आत्मार्थी ट्रस्ट : पण्डित संजयकुमारजी इंजि. खनियाँधाना **2. विश्वासनगर :** ब्र. कल्पना दीदी सागर 3. पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली 4. पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली 5. पण्डित संदीपजी शास्त्री दिल्ली 6. पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ़ 7. पण्डित जयप्रकाशजी शास्त्री गांधी दिल्ली 8. पण्डित संजीवजी शास्त्री बारां 9. पण्डित प्रयंकजी शास्त्री दिल्ली 10. पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर 11. पण्डित अश्विनजी नानावटी नौगामा बाँसवाड़ा 12. पण्डित सचिनजी शास्त्री गढ़ी बाँसवाड़ा 13. पण्डित मधुवनजी शास्त्री मुज्जफरनगर 14. पण्डित ऋषभजी शास्त्री ललितपुर 15. पण्डित मयंकजी शास्त्री गढ़ी बाँसवाड़ा 16. पण्डित निपुणजी शास्त्री सरदारशहर 17. पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री (ध्रुवधाम) बाँसवाड़ा 18. पण्डित पंकजजी शास्त्री बण्डा 19. पण्डित शैलेन्द्रजी शास्त्री जयपुर 20. पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई 21. पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल 22. पण्डित कान्तिकुमारजी इन्दौर 23. पण्डित तन्मयजी शास्त्री खनियाँधाना 24. ब्र. विमला बहनजी देवलाली 25. पण्डित अभिषेकजी शास्त्री (ध्रुवधाम) आंजना 26. पण्डित सुरेन्द्रजी शास्त्री (शाहगढ़) दिल्ली 27. पण्डित रॉकीजी गांधी शास्त्री डडूका **28. शिवाजी पार्क :** पण्डित महेशचन्दजी जैन ग्वालियर 29. पण्डित कस्तूरचन्दजी बजाज भोपाल 30. विदुषी श्रुति जैन शास्त्री, जयपुर 31. पण्डित अमोलजी शास्त्री (ध्रुवधाम) 32. पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री (ध्रुवधाम) 33. पण्डित मयंकजी शास्त्री (ध्रुवधाम) 34. पण्डित रोहितजी शास्त्री (ध्रुवधाम) 35. पण्डित चैतन्यजी शास्त्री (ध्रुवधाम) 36. पण्डित जयदीपजी शास्त्री (डडूका) 37. पण्डित करणजी शाह शास्त्री बड़ोदरा 38. पण्डित बसन्तजी शास्त्री तमिलनाडु 39. पण्डित कपिलजी शास्त्री पिडावा 40. पण्डित अर्पितजी शास्त्री बड़ामलहरा 41. पण्डित रितेशजी शास्त्री डडूका 42. पण्डित अभिषेकजी शास्त्री (ध्रुवधाम) 43. पण्डित सुमितजी शास्त्री (ध्रुवधाम) 44. पण्डित प्रीतमजी शास्त्री (ध्रुवधाम) 45. पण्डित मेघवीरजी शास्त्री (ध्रुवधाम) 46. पण्डित रॉकीजी शास्त्री (ध्रुवधाम) 47. पण्डित नीरजजी शास्त्री (ध्रुवधाम) 48. पण्डित सुदीपजी शास्त्री (ध्रुवधाम) 49. पण्डित सौरभजी शास्त्री (ध्रुवधाम)।

अन्य प्रान्त

1.बैंगलोर : पण्डित अनुभवजी शास्त्री कानपुर **2.एरनाकुलम :** पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर **3.बेलगांव (कर्नाटक) :** पण्डित अभिनवजी शास्त्री मैनपुरी **4. बेलगांव (मालमारूति) :** पण्डित अजितजी शास्त्री जयपुर **5.घटप्रभा :** पण्डित उदयजी शास्त्री जयपुर।

(पृष्ठ 1 का शेष...)
धनपालजी ज्ञायक परिवार बांसवाड़ा, श्री नवीनचंदजी केशवलालजी मेहता मुम्बई, श्रीमती ज्योतिबेन श्री मणीकान्तजी शाह घाटकोपर मुम्बई, स्व. श्रीमती हंसमुखदेवी जीवारामजी की स्मृति में हस्ते श्री जवाहरलालजी अकाउंटेंट जयपुर, श्री नरेन्द्रकुमारजी बड़जात्या जयपुर, श्री देवीलालजी कस्तूरचन्दजी मुम्बई, श्रीमती मनोरमाजी श्री कन्हैयालालजी कुचड़ौदवाले मंदसौर एवं श्री चन्दूभाई कुशलगढ थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर एवं पण्डित मधुकरजी जलगांव ने सम्पन्न कराये।

शिविर समापन समारोह में शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने कहा कि शिविर में २९ विद्वानों के माध्यम से लगभग १७५० साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। लगभग ५१,४४५ घंटों के प्रवचन तथा २,२५,००० रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुंचा। इस अवसर पर श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने सभी कार्यकर्त्ता विद्यार्थी विद्वानों का सम्मान किया। सभा का संचालन एवं आभार प्रदर्शन श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने किया।

सभी कार्यक्रम ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली, श्री महापालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा के निर्देशन में सम्पन्न हुये। ●

हार्दिक बधाई

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के छात्र श्री संदीप चौगुले ने जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय (जयपुर) द्वारा आयोजित शास्त्री परीक्षा 09 में विश्वविद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। एतदर्थ संस्कृत दिवस 2010 के अवसर पर दिनांक 24 अगस्त को सूचना केन्द्र जयपुर में आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय समारोह में उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा।

दिल्ली : यहाँ आत्मसाधना केन्द्र स्थित आत्मार्थी कन्या विद्यानिकेतन में दसवीं कक्षा में अध्ययनरत कु. जैनम जैन रतलाम ने 92% , पारुल जैन बहादुरगढ ने 88% एवं पूर्ति जैन टीकमगढ ने 86% अंक प्राप्त किये हैं। इस उपलब्धि पर आत्मार्थी कन्या विद्यानिकेतन एवं समस्त मुमुक्षु समाज गौरवान्वित है। हम इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

शोक समाचार

१. गोहाटी (असम) निवासी श्रीमती मणिप्रभा जैन (गंगवाल) धर्मपत्नी स्व. भंवरलालजी गंगवाल का दिनाँक 23 जुलाई को 80 वर्ष की आयु में विशुद्ध परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्याय प्रेमी महिला थीं, अन्त समय में सबसे क्षमा याचना करते हुये एवं मृत्यु-महोत्सव का पाठ करते हुये देह का त्याग किया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

२. तलोद (गुजरात) निवासी अरुणाबेन सुमतलाल गाँधी का दिनाँक 17 मई को देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 251/- रुपये प्राप्त हुये।

३. अहमदाबाद (गुजरात) निवासी हीराबेन पोपटलाल शाह का दिनाँक 8 सितम्बर 2009 को 90 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी महिला थीं एवं गुरुदेवश्री के प्रति बहुत आस्था रखती थीं। आपकी स्मृति में 5001/- रुपये वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु प्राप्त हुये हैं।

४. बीना बजरिया (म.प्र.) निवासी पण्डित मोतीलालजी सिंघई पिता श्री ऋषभकुमारजी सिंघई का दिनाँक 28 जुलाई को 84 वर्ष की आयु में अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। **देहावसान के पूर्व आपने अपने पुत्रों को गुरुदेवश्री द्वारा बताये गये तत्त्वज्ञान की शरण लेने एवं इसी से कल्याण होने की बात कहकर आत्मकल्याण हेतु प्रेरित किया।**

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

छोड़ो मांसाहार, बनो शाकाहारी

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक 9 अगस्त को गैर सरकारी एन.जी.ओ. पीपल फॉर एनिमल लिब्रेशन (पाल) के तत्त्वावधान में गांधी सर्किल पर साढे सात फीट के चिकन के पुतले के साथ **मैं भी जीव हूँ ... मुझे मत खाओ, मुझे भी जीने का अधिकार है.......**जैसे स्लोगन के माध्यम से मांसाहार त्यागने का आह्वान किया।

इस अवसर पर श्री कुलदीप रांका (जयपुर जिला कलेक्टर) ने पाल के इस कार्यक्रम की सराहना की। संस्था के संस्थापक श्री सर्वज्ञ भारिल्ल ने बताया कि ऐसे कार्यक्रम देशभर मे चलाये जायेंगे, जिससे आमजन अधिक से अधिक मांसाहार का त्यागकर शाकाहारी बने और अपने को स्वस्थ रख सके। विभिन्न आधुनिक सूचना स्रोतों (फेसबुक, ट्विटर और ब्लॉगिंग) के माध्यम से भी देश-विदेश के शाकाहार समर्थकों के साथ मिलकर मांसाहार त्यागने एवं जीव हत्या रोकने की अपील की जायेगी।

श्री सम्मेदशिखर वन्दना रथ प्रवर्तन समारोह

जयपुर (राज.): यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे शिक्षण शिविर के अन्तर्गत श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक ९ अगस्त को प्रात: सम्मेदशिखर वन्दना रथ प्रवर्तन समारोह रखा गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री एन.के.सेठी (अध्यक्ष-दि.जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी) एवं उद्घाटन श्री विवेकजी काला जयपुर (पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष- अ.भा.दि.जैन महासमिति) ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री कुलदीपजी रांका (जयपुर जिला कलेक्टर) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी (राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष-अ.भा.दि.जैन महासमिति) मंचासीन थे। तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टियों के अन्तर्गत ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, श्री सुमनभाई दोशी मुम्बई, श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई, पण्डित अमृतभाई मेहता फतेहपुर, श्री आलोकजी जैन कानपुर, श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं विद्वानों के अन्तर्गत तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, ब्र. यशपालजी जयपुर, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड आदि विद्वान मंचासीन थे।

मंगलाचरण पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल ने एवं संचालन श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने किया।

उद्घाटन के पश्चात् बहुत हर्षोल्लासपूर्वक जुलूस निकाला गया, जिसमें सभी शिविरार्थी सम्मिलित हुये। जुलूस में रथ के आगे महिलायें सिर पर मंगल कलश धारणकर मंगल गीत गाते हुये चल रही थीं। साथ ही महाविद्यालय के विद्यार्थी भी भजन आदि गाते हुये चल रहे थे। जुलूस स्मारक भवन से प्रारंभ होकर पार्श्वनाथ चैत्यालय होते हुये पुन: टोडरमल स्मारक भवन पहुँचा।

प्रकाशन तिथि : 13 अगस्त 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127